RAM RAKSHA STOTRA

WITH HINDI MEANING

AND

HINDI, KANNADA, GUJARATI, MARATHI

www.mahfil.in

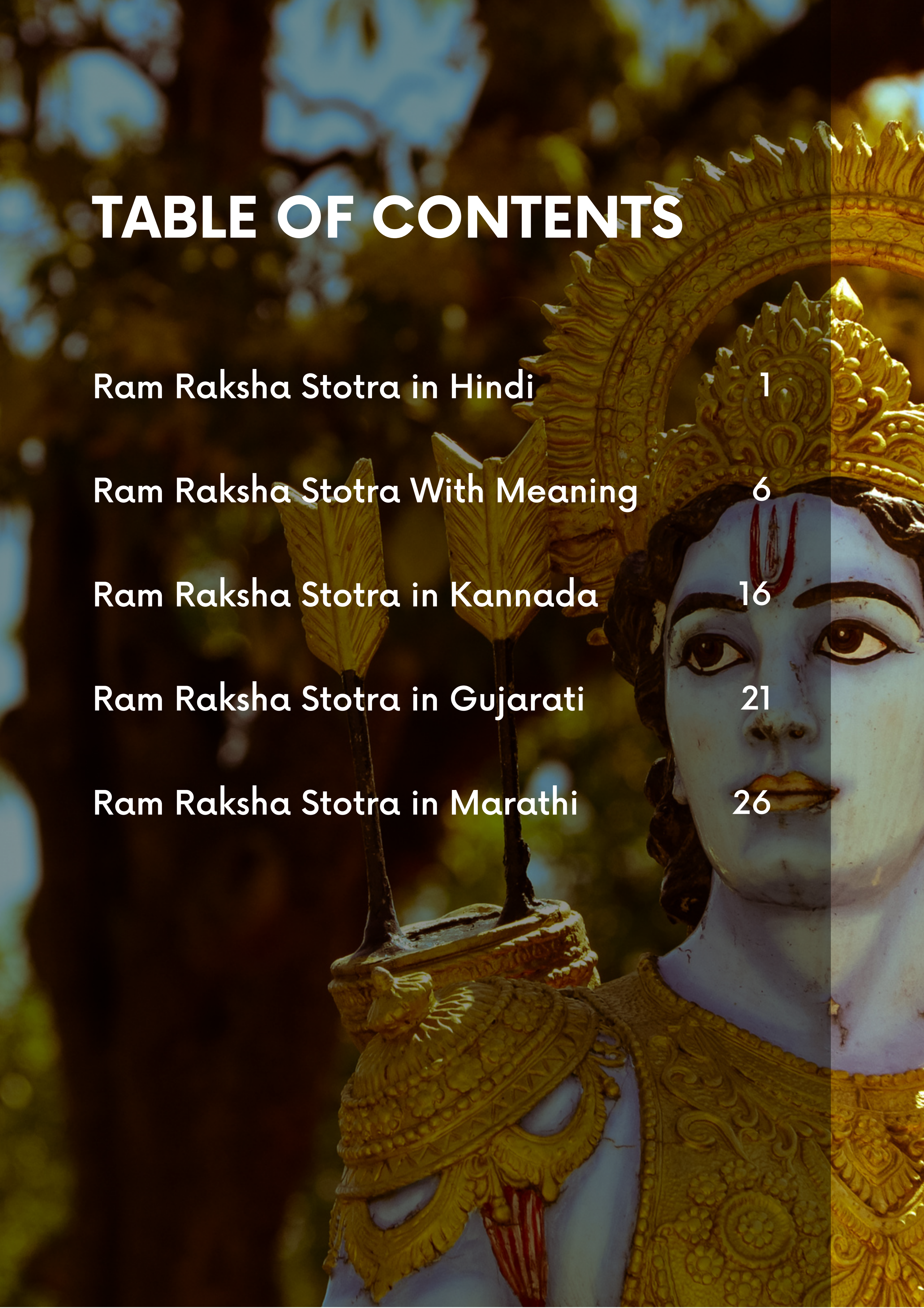

TABLE OF CONTENTS

Ram Raksha Stotra in Hindi 1

Ram Raksha Stotra With Meaning 6

Ram Raksha Stotra in Kannada 16

Ram Raksha Stotra in Gujarati 21

Ram Raksha Stotra in Marathi 26

RAM RAKSHA STOTRA

Mahfil

राम रक्षा स्तोत्र

विनियोग:

अस्य श्रीरामरक्षास्तोत्रमन्त्रस्य बुधकौशिक ऋषिः। श्री सीतारामचंद्रो देवता । अनुष्टुप् छंदः। सीता शक्तिः। श्रीमान हनुमान् कीलकम् । श्री सीतारामचंद्रप्रीत्यर्थे रामरक्षास्तोत्रजपे विनियोगः ।

अथ ध्यानम्::

ध्यायेदाजानुबाहुं धृतशरधनुषं बद्धपासनस्थं पीतं
वासो वसानं नवकमलदलस्पर्धिनेत्रं प्रसन्नम् ।
वामांकारुढसीतामुखकमलमिलल्लोचनं नीरदाभं
नानालंकार दीप्तं दधतमुरुजटामंडलं रामचंद्रम ।

चरितं रघुनाथस्य शतकोटिप्रविस्तरम् ।
एकैकमक्षरं पुंसां महापातकनाशनम् ॥1॥

ध्यात्वा नीलोत्पलश्यामं रामं राजीवलोचनम् ।
जानकीलक्ष्मणोपेतं जटामुकुटमंडितम् ॥2॥

सासितूणधनुर्बाणपाणिं नक्तंचरांतकम् ।
स्वलीलया जगत्रातुमाविर्भूतमजं विभुम् ॥3॥

रामरक्षां पठेत्प्राज्ञः पापघ्नीं सर्वकामदाम् ।
शिरो मे राघवः पातु भालं दशरथात्मजः ॥4॥

कौसल्येयो दृशौ पातु विश्वामित्रप्रियः श्रुती ।
घ्राणं पातु मखत्राता मुखं सौमित्रिवत्सलः ॥5॥

जिह्वां विद्यानिधिः पातु कण्ठं भरतवंदितः ।
स्कंधौ दिव्यायुधः पातु भुजौ भग्नेशकार्मुकः ॥6॥

करौ सीतापतिः पातु हृदयं जामदग्न्यजित् ।
मध्यं पातु खरध्वंसी नाभिं जाम्बवदाश्रयः ॥7॥

सुग्रीवेशः कटी पातु सक्थिनी हनुमत्प्रभुः ।
उरू रघूत्तमः पातु रक्षःकुलविनाशकृत् ॥8॥

जानुनी सेतुकृत्पातु जंघे दशमुखान्तकः ।
पादौ विभीषणश्रीदः पातु रामोऽखिलं वपुः ॥9॥

एतां रामबलोपेतां रक्षां यः सुकृती पठेत् ।
स चिरायुः सुखी पुत्री विजयी विनयी भवेत् ॥10॥

पातालभूतलव्योमचारिणश्छचारिणः ।
न दृष्टुमति शक्तास्ते रक्षितं रामनामभिः ॥11॥

रामेति रामभद्रेति रामचन्द्रेति वा स्मरन् ।
नरो न लिप्यते पापैर्भुक्तिं मुक्तिं च विन्दति ॥12॥

जगज्जैत्रैकमन्त्रेण रामनाम्नाऽभिरक्षितम् ।
यः कण्ठे धारयेत्तस्य करस्थाः सर्वसिद्धयः ॥13॥

वज्रपंजरनामेदं यो रामकवचं स्मरेत् ।
अव्याहताज्ञः सर्वत्र लभते जयमंगलम् ॥14॥

आदिष्टवान्यथा स्वप्ने रामरक्षामिमां हरः ।
तथा लिखितवान्प्रातः प्रबुद्धो बुधकौशिकः ॥15॥

आरामः कल्पवृक्षाणां विरामः सकलापदाम् ।
अभिरामस्त्रिलोकानां रामः श्रीमान्स नः प्रभुः ॥16॥

तरुणौ रूप सम्पन्नौ सुकुमारौ महाबलौ ।
पुण्डरीकविशालाक्षौ चीरकृष्णाजिनाम्बरौ ॥17॥

फलमूलाशिनौ दान्तौ तापसौ ब्रह्मचारिणौ ।
पुत्रौ दशरथस्यैतौ भ्रातरौ रामलक्ष्मणौ ॥18॥

शरण्यौ सूर्वसत्त्वानां श्रेष्ठौ सर्वधनुष्मताम् ।
रक्षःकुलनिहन्तारौ त्रायेतां नो रघूत्तमौ ॥19॥

आत्तसज्जधनुषाविषुस्पृशावक्षयाशुगनिषंगसंगिनौ ।
रक्षणाय मम रामलक्ष्मणावग्रतः पथि सदैव गच्छताम् ॥20॥

सन्नद्धः कवची खड्गी चापबाणधरो युवा ।
गच्छन्मनोरथान्नश्च रामः पातु सलक्ष्मणः ॥21॥

रामो दाशरथिः शूरो लक्ष्मणानुचरो बली ।
काकुत्स्थः पुरुषः पूर्णः कौसल्येयो रघूत्तमः ॥22॥

वेदान्तवेद्यो यज्ञेशः पुराणपुरुषोत्तमः ।
जानकीवल्लभः श्रीमानप्रमेयपराक्रमः ॥23॥

इत्येतानि जपन्नित्यं मद्भक्तः श्रद्धयाऽन्वितः ।
अश्वमेधाधिकं पुण्यं सम्प्राप्नोति न संशयः ॥24॥

रामं दूर्वादलश्यामं पाक्षं पीतवाससम् ।
स्तुवन्ति नामभिर्दिव्यैर्न ते संसारिणो नराः ॥25॥

रामं लक्ष्मणपूर्वजं रघुवरं सीतापतिं सुन्दरं
काकुत्स्थं करुणार्णवं गुणनिधिं विप्रप्रियं धार्मिकम् ।

राजेन्द्रं सत्यसंधं दशरथतनयं श्यामलं शान्तमूर्तिं
वन्दे लोकाभिरामं रघुकुलतिलकं राघवं रावणारिम् ॥26॥

रामाय रामभद्राय रामचन्द्राय वेधसे ।
रघुनाथाय नाथाय सीतायाः पतये नमः ॥27॥

श्रीराम राम रघुनन्दनराम राम
श्रीराम राम भरताग्रज राम राम ।
श्रीराम राम रणकर्कश राम राम
श्रीराम राम शरणं भव राम राम ॥28॥

श्रीरामचन्द्रचरणौ मनसा स्मरामि
श्रीरामचन्द्रचरणौ वचंसा गृणामि ।
श्रीरामचन्द्रचरणौ शिरसा नमामि
श्रीरामचन्द्रचरणौ शरणं प्रपद्ये ॥29॥

माता रामो मत्पिता रामचन्द्रः
स्वामी रामो मत्सखा रामचन्द्रः ।
सर्वस्वं मे रामचन्द्रो दयलुर्नान्यं
जाने नैव जाने न जाने ॥30॥

दक्षिणे लक्ष्मणो यस्य वामे तु जनकात्मजा ।
पुरतो मारुतिर्यस्य तं वंदे रघुनन्दनम् ॥31॥

लोकाभिरामं रणरंगधीरं राजीवनेत्रं रघुवंशनाथम ।
कारुण्यरूपं करुणाकरं तं श्रीरामचंद्रं शरणं प्रपद्ये ॥32॥

मनोजवं मारुततुल्यवेगं जितेन्द्रियं बुद्धिमतां वरिष्ठम् ।
वातात्मजं वानरयूथमुख्यं श्रीरामदूतं शरणं प्रपद्ये ॥33॥

कूजन्तं राम रामेति मधुरं मधुराक्षरम् ।
आरुह्य कविताशाखां वन्दे वाल्मीकिकोकिलम् ॥34॥

आपदामपहर्तारं दातारं सर्वसम्पदाम् ।
लोकाभिरामं श्रीरामं भूयो भूयो नमाम्यहम् ॥35॥

भर्जनं भवबीजानामर्जनं सुखसम्पदाम् ।
तर्जनं यमदूतानां राम रामेति गर्जनम् ॥36॥

रामो राजमणिः सदा विजयते रामं रामेशं भजे
रामेणाभिहता निशाचरचमू रामाय तस्मै नमः ।
रामान्नास्ति परायणं परतरं रामस्य दासोऽस्म्यहं
रामे चित्तलयः सदा भवतु मे भो राम मामुद्धर ॥37॥

राम रामेति रामेति रमे रामे मनोरमे ।
सहस्त्रनाम तत्तुल्यं रामनाम वरानने ॥38॥

॥ श्री बुधकौशिकविरचितं श्रीरामरक्षास्तोत्रं सम्पूर्ण ॥

राम रक्षा स्तोत्र (अर्थ के साथ)

ॐ अस्य श्रीरामरक्षास्तोत्रमन्त्रस्य बुधकौशिक ऋषि: श्रीसीताराम [illegible]
अनुष्टुप्छन्द: सीता शक्ति: श्रीमद्हनुमान् कीलकम् श्रीरामचंद्रप्रीत्य[illegible]
रामरक्षास्तोत्रजपे विनियोग: ॥

अर्थ : इस राम रक्षा स्तोत्र मंत्र के रचयिता बुध कौशिक ऋषि हैं, सीता और रामचंद्र देवता हैं, अनुष्टुप छंद हैं, सीता शक्ति हैं, हनुमान जी कीलक है तथा श्री रामचंद्र जी की प्रसन्नता के लिए राम रक्षा स्तोत्र के जप में विनियोग किया जाता हैं |

॥ अथ ध्यानम् ॥

ध्यायेदाजानुबाहुं धृतशरधनुषं बद्दद्पद्मासनस्थं ।
पीतं वासोवसानं नवकमलदलस्पर्धिनेत्रं प्रसन्नम् ॥
वामाङ्कारूढसीता मुखकमलमिलल्लोचनं नीरदाभं ।
नानालङ्कारदीप्तं दधतमुरुजटामण्डनं रामचंद्रम् ॥

अर्थ : ध्यान : जो धनुष-बाण धारण किए हुए हैं, बद्दपासन की मुद्रा में विराजमान हैं और पीतांबर पहने हुए हैं, जिनके आलोकित नेत्र नए कमल दल के समान स्पर्धा करते हैं, जो बाएँ ओर स्थित सीताजी के मुख कमल से मिले हुए हैं- उन आजानु बाहु, मेघश्याम,विभिन्न अलंकारों से विभूषित तथा जटाधारी श्रीराम का ध्यान करें |

॥ स्तोत्रम् ॥

चरितं रघुनाथस्य शतकोटिप्रविस्तरम् ।
एकैकमक्षरं पुंसां महापातकनाशनम् ॥१॥

अर्थ : श्री रघुनाथजी का चरित्र सौ करोड़ विस्तार वाला हैं | उसका एक-एक अक्षर महापातकों को नष्ट करने वाला है |

ध्यात्वा नीलोत्पलश्यामं रामं राजीवलोचनम् ।
जानकीलक्ष्मणोपेतं जटामुकुटमण्डितम् ॥२॥

अर्थ : नीले कमल के श्याम वर्ण वाले, कमलनेत्र वाले , जटाओं के मुकुट से सुशोभित, जानकी तथा लक्ष्मण सहित ऐसे भगवान् श्री राम का स्मरण करके,

सासितूणधनुर्बाणपाणिं नक्तं चरान्तकम् ।
स्वलीलया जगत्रातुमाविर्भूतमजं विभुम् ॥३॥

अर्थ : जो अजन्मा एवं सर्वव्यापक, हाथों में खड्ग, तुणीर, धनुष-बाण धारण किए राक्षसों के संहार तथा अपनी लीलाओं से जगत रक्षा हेतु अवतीर्ण श्रीराम का स्मरण करके,

रामरक्षां पठेत्प्राज्ञः पापघ्नीं सर्वकामदाम् ।
शिरो मे राघवः पातु भालं दशरथात्मजः ॥४॥

अर्थ : मैं सर्वकामप्रद और पापों को नष्ट करने वाले राम रक्षा स्तोत्र का पाठ करता हूँ | राघव मेरे सिर की और दशरथ के पुत्र मेरे ललाट की रक्षा करें |

कौसल्येयो दृशौ पातु विश्वामित्रप्रियः श्रुती ।
घ्राणं पातु मखत्राता मुखं सौमित्रिवत्सलः ॥५॥

अर्थ : कौशल्या नंदन मेरे नेत्रों की, विश्वामित्र के प्रिय मेरे कानों की, यज्ञरक्षक मेरे घ्राण की और सुमित्रा के वत्सल मेरे मुख की रक्षा करें |

जिव्हां विद्यानिधिः पातु कण्ठं भरतवंदितः ।
स्कन्धौ दिव्यायुधः पातु भुजौ भग्नेशकार्मुकः ॥६॥

अर्थ : मेरी जिह्वा की विधानिधि रक्षा करें, कंठ की भरत-वंदित, कंधों की दिव्यायुध और भुजाओं की महादेवजी का धनुष तोड़ने वाले भगवान् श्रीराम रक्षा करें |

करौ सीतपतिः पातु हृदयं जामदग्न्यजित् ।
मध्यं पातु खरध्वंसी नाभिं जाम्बवदाश्रयः ॥७॥

मेरे हाथों की सीता पति श्रीराम रक्षा करें, हृदय की जमदग्नि ऋषि के पुत्र (परशुराम) को जीतने वाले, मध्य भाग की खर (नाम के राक्षस) के वधकर्ता और नाभि की जांबवान के आश्रयदाता रक्षा करें |

सुग्रीवेशः कटी पातु सक्थिनी हनुमत्प्रभुः ।
ऊरू रघुत्तमः पातु रक्षःकुलविनाशकृत् ॥८॥

अर्थ : मेरे कमर की सुग्रीव के स्वामी, हडियों की हनुमान के प्रभु और रानों की राक्षस कुल का विनाश करने वाले रघुश्रेष्ठ रक्षा करें |

जानुनी सेतुकृत्पातु जङ्घे दशमुखान्तकः ।
पादौ बिभीषणश्रीदः पातु रामोऽखिलं वपुः ॥९॥

अर्थ : मेरे जानुओं की सेतुकृत, जंघाओं की दशानन वधकर्ता, चरणों की विभीषण को ऐश्वर्य प्रदान करने वाले और सम्पूर्ण शरीर की श्रीराम रक्षा करें |

एतां रामबलोपेतां रक्षां यः सुकृती पठेत् ।
स चिरायुः सुखी पुत्री विजयी विनयी भवेत् ॥१०॥

अर्थ : शुभ कार्य करने वाला जो भक्त भक्ति एवं श्रद्धा के साथ रामबल से संयुक्त होकर इस स्तोत्र का पाठ करता हैं, वह दीर्घायु, सुखी, पुत्रवान, विजयी और विनयशील हो जाता हैं |

पातालभूतलव्योम चारिणश्छद्मचारिण: ।
न द्र्ष्टुमपि शक्तास्ते रक्षितं रामनामभि: ॥११॥

जो जीव पाताल, पृथ्वी और आकाश में विचरते रहते हैं अथवा छद्म वेश में घूमते रहते हैं , वे राम नामों से सुरक्षित मनुष्य को देख भी नहीं पाते |

रामेति रामभद्रेति रामचंद्रेति वा स्मरन् ।
नरो न लिप्यते पापै भुक्तिं मुक्तिं च विन्दति ॥१२॥

अर्थ : राम, रामभद्र तथा रामचंद्र आदि नामों का स्मरण करने वाला रामभक्त पापों से लिप्त नहीं होता. इतना ही नहीं, वह अवश्य ही भोग और मोक्ष दोनों को प्राप्त करता है |

जगज्जेत्रैकमन्त्रेण रामनाम्नाभिरक्षितम् ।
य: कण्ठे धारयेत्तस्य करस्था: सर्वसिद्द्दय: ॥१३॥

अर्थ : जो संसार पर विजय करने वाले मंत्र राम-नाम से सुरक्षित इस स्तोत्र को कंठस्थ कर लेता हैं, उसे सम्पूर्ण सिद्धियाँ प्राप्त हो जाती हैं |

वज्रपंजरनामेदं यो रामकवचं स्मरेत् ।
अव्याहताज्ञ: सर्वत्र लभते जयमंगलम् ॥१४॥

अर्थ : जो मनुष्य वज्रपंजर नामक इस राम कवच का स्मरण करता हैं, उसकी आज्ञा का कहीं भी उल्लंघन नहीं होता तथा उसे सदैव विजय और मंगल की ही प्राप्ति होती हैं |

आदिष्टवान्यथा स्वप्ने रामरक्षामिमां हरः ।
तथा लिखितवान् प्रातः प्रबुद्धो बुधकौशिकः ॥१५॥

अर्थ : भगवान् शंकर ने स्वप्न में इस रामरक्षा स्तोत्र का आदेश बुध कौशिक ऋषि को दिया था, उन्होंने प्रातः काल जागने पर उसे वैसा ही लिख दिया |

आरामः कल्पवृक्षाणां विरामः सकलापदाम् ।
अभिरामस्त्रिलोकानां रामः श्रीमान् स नः प्रभुः ॥१६॥

अर्थ : जो कल्प वृक्षों के बगीचे के समान विश्राम देने वाले हैं, जो समस्त विपत्तियों को दूर करने वाले हैं और जो तीनो लोकों में सुंदर हैं, वही श्रीमान राम हमारे प्रभु हैं |

तरुणौ रूपसंपन्नौ सुकुमारौ महाबलौ ।
पुण्डरीकविशालाक्षौ चीरकृष्णाजिनाम्बरौ ॥१७॥

अर्थ : जो युवा,सुन्दर, सुकुमार,महाबली और कमल (पुण्डरीक) के समान विशाल नेत्रों वाले हैं, मुनियों की तरह वस्त्र एवं काले मृग का चर्म धारण करते हैं |

फलमूलशिनौ दान्तौ तापसौ ब्रह्मचारिणौ ।
पुत्रौ दशरथस्यैतौ भ्रातरौ रामलक्ष्मणौ ॥१८॥

अर्थ : जो फल और कंद का आहार ग्रहण करते हैं, जो संयमी , तपस्वी एवं ब्रह्मचारी हैं , वे दशरथ के पुत्र राम और लक्ष्मण दोनों भाई हमारी रक्षा करें |

शरण्यौ सर्वसत्वानां श्रेष्ठौ सर्वधनुष्मताम् ।
रक्ष:कुलनिहन्तारौ त्रायेतां नो रघुत्तमौ ॥१९॥

अर्थ : ऐसे महाबली – रघुश्रेष्ठ मर्यादा पुरूषोतम समस्त प्राणियों के शरणदाता, सभी धनुर्धारियों में श्रेष्ठ और राक्षसों के कुलों का समूल नाश करने में समर्थ हमारा त्राण करें |

आत्तसज्जधनुषा विषुस्पृशा वक्षया शुगनिषङ्ग सङ्गिनौ ।
रक्षणाय मम रामलक्ष्मणा वग्रत: पथि सदैव गच्छताम् ॥२०॥

अर्थ : संघान किए धनुष धारण किए, बाण का स्पर्श कर रहे, अक्षय बाणों से युक्त तुणीर लिए हुए राम और लक्ष्मण मेरी रक्षा करने के लिए मेरे आगे चलें |

संनद्ध: कवची खड्गी चापबाणधरो युवा ।
गच्छन्मनोरथोऽस्माकं राम: पातु सलक्ष्मण: ॥२१॥

अर्थ : हमेशा तत्पर, कवचधारी, हाथ में खडग, धनुष-बाण तथा युवावस्था वाले भगवान् राम लक्ष्मण सहित आगे-आगे चलकर हमारी रक्षा करें |

रामो दाशरथि: शूरो लक्ष्मणानुचरो बली ।
काकुत्स्थ: पुरुष: पूर्ण: कौसल्येयो रघुत्तम: ॥२२॥

अर्थ : भगवान् का कथन है की श्रीराम, दाशरथी, शूर, लक्ष्मनाचुर, बली, काकुत्स्थ , पुरुष, पूर्ण, कौसल्येय, रघुतम,

वेदान्तवेद्यो यज्ञेशः पुराणपुरुषोत्तमः ।
जानकीवल्लभः श्रीमानप्रमेय पराक्रमः ॥२३॥

अर्थ : वेदान्त्वेघ, यज्ञेश,पुराण पुरुषोतम , जानकी वल्लभ, श्रीमान और अप्रमेय पराक्रम आदि नामों का

इत्येतानि जपेन्नित्यं मद्भक्तः श्रद्धयान्वितः ।
अश्वमेधाधिकं पुण्यं संप्राप्नोति न संशयः ॥२४॥

अर्थ : नित्यप्रति श्रद्धापूर्वक जप करने वाले को निश्चित रूप से अश्वमेध यज्ञ से भी अधिक फल प्राप्त होता हैं |

रामं दूर्वादलश्यामं पद्माक्षं पीतवाससम् ।
स्तुवन्ति नामभिर्दिव्यैर्न ते संसारिणो नरः ॥२५॥

अर्थ : दूर्वादल के समान श्याम वर्ण, कमल-नयन एवं पीतांबरधारी श्रीराम की उपरोक्त दिव्य नामों से स्तुति करने वाला संसारचक्र में नहीं पड़ता |

रामं लक्ष्मण पूर्वजं रघुवरं सीतापतिं सुंदरम् ।
काकुत्स्थं करुणार्णवं गुणनिधिं विप्रप्रियं धार्मिकम्
राजेन्द्रं सत्यसंधं दशरथनयं श्यामलं शान्तमूर्तिम् ।
वन्दे लोकभिरामं रघुकुलतिलकं राघवं रावणारिम् ॥२६॥

अर्थ : लक्ष्मण जी के पूर्वज , सीताजी के पति, काकुत्स्थ, कुल-नंदन, करुणा के सागर , गुण-निधान , विप्र भक्त, परम धार्मिक , राजराजेश्वर, सत्यनिष्ठ, दशरथ के पुत्र, श्याम और शांत मूर्ति, सम्पूर्ण लोकों में सुन्दर, रघुकुल तिलक , राघव एवं रावण के शत्रु भगवान् राम की मैं वंदना करता हूँ |

रामाय रामभद्राय रामचंद्राय वेधसे ।
रघुनाथाय नाथाय सीताया: पतये नम: ॥२७॥

अर्थ : राम, रामभद्र, रामचंद्र, विधात स्वरूप , रघुनाथ, प्रभु एवं सीताजी के स्वामी की मैं वंदना करता हूँ |

श्रीराम राम रघुनन्दन राम राम ।
श्रीराम राम भरताग्रज राम राम ।
श्रीराम राम रणकर्कश राम राम ।
श्रीराम राम शरणं भव राम राम ॥२८॥

अर्थ : हे रघुनन्दन श्रीराम ! हे भरत के अग्रज भगवान् राम! हे रणधीर, मर्यादा पुरुषोत्तम श्रीराम ! आप मुझे शरण दीजिए |

श्रीरामचन्द्रचरणौ मनसा स्मरामि ।
श्रीरामचन्द्रचरणौ वचसा गृणामि ।
श्रीरामचन्द्रचरणौ शिरसा नमामि ।
श्रीरामचन्द्रचरणौ शरणं प्रपद्ये ॥२९॥

अर्थ : मैं एकाग्र मन से श्रीरामचंद्रजी के चरणों का स्मरण और वाणी से गुणगान करता हूँ, वाणी द्वारा और पूरी श्रद्धा के साथ भगवान् रामचन्द्र के चरणों को प्रणाम करता हुआ मैं उनके चरणों की शरण लेता हूँ |

माता रामो मत्पिता रामचंन्द्र: ।
स्वामी रामो मत्सखा रामचंद्र: ।
सर्वस्वं मे रामचन्द्रो दयालु ।
नान्यं जाने नैव जाने न जाने ॥३०॥

अर्थ : श्रीराम मेरे माता, मेरे पिता , मेरे स्वामी और मेरे सखा हैं | इस प्रकार दयालु श्रीराम मेरे सर्वस्व हैं. उनके सिवा में किसी दुसरे को नहीं जानता |

Mahfil

दक्षिणे लक्ष्मणो यस्य वामे तु जनकात्मजा ।
पुरतो मारुतिर्यस्य तं वन्दे रघुनंदनम् ॥३१॥

अर्थ : जिनके दाईं और लक्ष्मण जी, बाईं और जानकी जी और सामने हनुमान ही विराजमान हैं, मैं उन्ही रघुनाथ जी की वंदना करता हूँ |

लोकाभिरामं रनरङ्गधीरं राजीवनेत्रं रघुवंशनाथम् ।
कारुण्यरूपं करुणाकरंतं श्रीरामचंद्रं शरणं प्रपद्ये ॥३२॥

अर्थ : मैं सम्पूर्ण लोकों में सुन्दर तथा रणक्रीड़ा में धीर, कमलनेत्र, रघुवंश नायक, करुणा की मूर्ति और करुणा के भण्डार की श्रीराम की शरण में हूँ |

मनोजवं मारुततुल्यवेगं जितेन्द्रियं बुद्धिमतां वरिष्ठम् ।
वातात्मजं वानरयूथमुख्यं श्रीरामदूतं शरणं प्रपद्ये ॥३३॥

अर्थ : जिनकी गति मन के समान और वेग वायु के समान (अत्यंत तेज) है, जो परम जितेन्द्रिय एवं बुद्धिमानों में श्रेष्ठ हैं, मैं उन पवन-नंदन वानारग्रगण्य श्रीराम दूत की शरण लेता हूँ |

कूजन्तं रामरामेति मधुरं मधुराक्षरम् ।
आरुह्य कविताशाखां वन्दे वाल्मीकिकोकिलम् ॥३४॥

अर्थ : मैं कवितामयी डाली पर बैठकर, मधुर अक्षरों वाले 'राम-राम' के मधुर नाम को कूजते हुए वाल्मीकि रुपी कोयल की वंदना करता हूँ |

आपदामपहर्तारं दातारं सर्वसंपदाम् ।
लोकाभिरामं श्रीरामं भूयो भूयो नमाम्यहम् ॥३५॥

अर्थ : मैं इस संसार के प्रिय एवं सुन्दर उन भगवान् राम को बार-बार नमन करता हूँ, जो सभी आपदाओं को दूर करने वाले तथा सुख-सम्पति प्रदान करने वाले हैं |

भर्जनं भवबीजानामर्जनं सुखसंपदाम् ।
तर्जनं यमदूतानां रामरामेति गर्जनम् ॥३६॥

अर्थ : 'राम-राम' का जप करने से मनुष्य के सभी कष्ट समाप्त हो जाते हैं | वह समस्त सुख-सम्पति तथा ऐश्वर्य प्राप्त कर लेता हैं | राम-राम की गर्जना से यमदूत सदा भयभीत रहते हैं |

रामो राजमणि: सदा विजयते रामं रमेशं भजे ।
रामेणाभिहता निशाचरचमू रामाय तस्मै नम: ।
रामान्नास्ति परायणं परतरं रामस्य दासोस्म्यहम् ।
रामे चित्तलय: सदा भवतु मे भो राम मामुद्धर ॥३७॥

अर्थ : राजाओं में श्रेष्ठ श्रीराम सदा विजय को प्राप्त करते हैं | मैं लक्ष्मीपति भगवान् श्रीराम का भजन करता हूँ | सम्पूर्ण राक्षस सेना का नाश करने वाले श्रीराम को मैं नमस्कार करता हूँ | श्रीराम के समान अन्य कोई आश्रयदाता नहीं | मैं उन शरणागत वत्सल का दास हूँ | मैं हमेशा श्रीराम मैं ही लीन रहूँ | हे श्रीराम! आप मेरा उद्धार करें |

राम रामेति रामेति रमे रामे मनोरमे ।
सहस्रनाम तत्तुल्यं रामनाम वरानने ॥३८॥

अर्थ : हे सुमुखी ! राम- नाम 'विष्णु सहस्त्रनाम' के समान हैं | मैं सदा राम का स्तवन करता हूँ और राम-नाम में ही रमण करता हूँ |

Mahfil

Ram Raksha Stotra in Kannada

ಧ್ಯಾನಂ |

ಧ್ಯಾಯೇದಾಜಾನುಬಾಹುಂ ಧೃತಶರಧನುಷಂ ಬದ್ಧಪದ್ಮಾಸನಸ್ಥಂ
ಪೀತಂ ವಾಸೋ ವಸಾನಂ ನವಕಮಲದಳಸ್ಪರ್ಧಿನೇತ್ರಂ ಪ್ರಸನ್ನಮ್ |
ವಾಮಾಂಕಾರೂಢಸೀತಾಮುಖಕಮಲಮಿಲಲ್ಲೋಚನಂ ನೀರದಾಭಂ
ನಾನಾಲಂಕಾರದೀಪ್ತಂ ದಧತಮುರುಜಟಾಮಂಡಲಂ ರಾಮಚಂದ್ರಮ್ ||

ಅಥ ಸ್ತೋತ್ರಂ |

ಚರಿತಂ ರಘುನಾಥಸ್ಯ ಶತಕೋಟಿಪ್ರವಿಸ್ತರಮ್ |
ಏಕೈಕಮಕ್ಷರಂ ಪುಂಸಾಂ ಮಹಾಪಾತಕನಾಶನಮ್ || ೧ ||

ಧ್ಯಾತ್ವಾ ನೀಲೋತ್ಪಲಶ್ಯಾಮಂ ರಾಮಂ ರಾಜೀವಲೋಚನಮ್ |
ಜಾನಕೀಲಕ್ಷ್ಮಣೋಪೇತಂ ಜಟಾಮುಕುಟಮಂಡಿತಮ್ || ೨ ||

ಸಾಽಸಿತೂಣಧನುರ್ಬಾಣಪಾಣಿಂ ನಕ್ತಂಚರಾಂತಕಮ್ |
ಸ್ವಲೀಲಯಾ ಜಗತ್ತ್ರಾತುಮಾವಿರ್ಭೂತಮಜಂ ವಿಭುಮ್ || ೩ ||

ರಾಮರಕ್ಷಾಂ ಪಠೇತ್ಪ್ರಾಜ್ಞಃ ಪಾಪಘ್ನೀಂ ಸರ್ವಕಾಮದಾಮ್ |
ಶಿರೋ ಮೇ ರಾಘವಃ ಪಾತು ಫಾಲಂ ದಶರಥಾತ್ಮಜಃ || ೪ ||

ಕೌಸಲ್ಯೇಯೋ ದೃಶೌ ಪಾತು ವಿಶ್ವಾಮಿತ್ರಪ್ರಿಯಃ ಶ್ರುತೀ |
ಘ್ರಾಣಂ ಪಾತು ಮಖತ್ರಾತಾ ಮುಖಂ ಸೌಮಿತ್ರಿವತ್ಸಲಃ || ೫ ||

ಜಿಹ್ವಾಂ ವಿದ್ಯಾನಿಧಿಃ ಪಾತು ಕಂಠಂ ಭರತವಂದಿತಃ |
ಸ್ಕಂಧೌ ದಿವ್ಯಾಯುಧಃ ಪಾತು ಭುಜೌ ಭಗ್ನೇಶಕಾರ್ಮುಕಃ || ೬ ||

ಕರೌ ಸೀತಾಪತಿಃ ಪಾತು ಹೃದಯಂ ಜಾಮದಗ್ನ್ಯಜಿತ್ |
ಮಧ್ಯಂ ಪಾತು ಖರಧ್ವಂಸೀ ನಾಭಿಂ ಜಾಂಬವದಾಶ್ರಯಃ || ೭ ||

ಸುಗ್ರೀವೇಶಃ ಕಟೀ ಪಾತು ಸಕ್ಥಿನೀ ಹನುಮತ್ಪ್ರಭುಃ |
ಊರೂ ರಘೂತ್ತಮಃ ಪಾತು ರಕ್ಷಃಕುಲವಿನಾಶಕೃತ್ || ೮ ||

ಜಾನುನೀ ಸೇತುಕೃತ್ಪಾತು ಜಂಘೇ ದಶಮುಖಾಂತಕಃ |
ಪಾದೌ ವಿಭೀಷಣಶ್ರೀದಃ ಪಾತು ರಾಮೋಽಖಿಲಂ ವಪುಃ || ೯ ||

ಏತಾಂ ರಾಮಬಲೋಪೇತಾಂ ರಕ್ಷಾಂ ಯಃ ಸುಕೃತೀ ಪಠೇತ್ |
ಸ ಚಿರಾಯುಃ ಸುಖೀ ಪುತ್ರೀ ವಿಜಯೀ ವಿನಯೀ ಭವೇತ್ || ೧೦ ||

ಪಾತಾಲಭೂತಲವ್ಯೋಮಚಾರಿಣಶ್ಛದ್ಮಚಾರಿಣಃ |
ನ ದ್ರಷ್ಟುಮಪಿ ಶಕ್ತಾಸ್ತೇ ರಕ್ಷಿತಂ ರಾಮನಾಮಭಿಃ || ೧೧ ||

ರಾಮೇತಿ ರಾಮಭದ್ರೇತಿ ರಾಮಚಂದ್ರೇತಿ ವಾ ಸ್ಮರನ್ |
ನರೋ ನ ಲಿಪ್ಯತೇ ಪಾಪೈರ್ಭುಕ್ತಿಂ ಮುಕ್ತಿಂ ಚ ವಿಂದತಿ || ೧೨ ||

ಜಗಜ್ಜೈತ್ರೈಕಮಂತ್ರೇಣ ರಾಮನಾಮ್ನಾಭಿರಕ್ಷಿತಮ್ |
ಯಃ ಕಂಠೇ ಧಾರಯೇತ್ತಸ್ಯ ಕರಸ್ಥಾಃ ಸರ್ವಸಿದ್ಧಯಃ || ೧೩ ||

ವಜ್ರಪಂಜರನಾಮೇದಂ ಯೋ ರಾಮಕವಚಂ ಸ್ಮರೇತ್ |
ಅವ್ಯಾಹತಾಜ್ಞಃ ಸರ್ವತ್ರ ಲಭತೇ ಜಯಮಂಗಳಮ್ || ೧೪ ||

ಆದಿಷ್ಟವಾನ್ಯಥಾ ಸ್ವಪ್ನೇ ರಾಮರಕ್ಷಾಮಿಮಾಂ ಹರಃ |
ತಥಾ ಲಿಖಿತವಾನ್ಪ್ರಾತಃ ಪ್ರಬುದ್ಧೋ ಬುಧಕೌಶಿಕಃ || ೧೫ ||

ಆರಾಮಃ ಕಲ್ಪವೃಕ್ಷಾಣಾಂ ವಿರಾಮಃ ಸಕಲಾಪದಾಮ್ |
ಅಭಿರಾಮಸ್ತ್ರಿಲೋಕಾನಾಂ ರಾಮಃ ಶ್ರೀಮಾನ್ ಸ ನಃ ಪ್ರಭುಃ || ೧೬ ||

ತರುಣೌ ರೂಪಸಂಪನ್ನೌ ಸುಕುಮಾರೌ ಮಹಾಬಲೌ |
ಪುಂಡರೀಕ ವಿಶಾಲಾಕ್ಷೌ ಚೀರಕೃಷ್ಣಾಜಿನಾಂಬರೌ || ೧೭ ||

ಫಲಮೂಲಾಶಿನೌ ದಾಂತೌ ತಾಪಸೌ ಬ್ರಹ್ಮಚಾರಿಣೌ |
ಪುತ್ರೌ ದಶರಥಸ್ಯೈತೌ ಭ್ರಾತರೌ ರಾಮಲಕ್ಷ್ಮಣೌ || ೧೮ ||

ಶರಣ್ಯೌ ಸರ್ವಸತ್ತ್ವಾನಾಂ ಶ್ರೇಷ್ಠೌ ಸರ್ವಧನುಷ್ಮತಾಮ್ |
ರಕ್ಷಃ ಕುಲನಿಹಂತಾರೌ ತ್ರಾಯೇತಾಂ ನೋ ರಘೂತ್ತಮೌ || ೧೯ ||

ಆತ್ತಸಜ್ಯಧನುಷಾವಿಷುಸ್ಪೃಶಾವಕ್ಷಯಾಶುಗನಿಷಂಗಸಂಗಿನೌ |
ರಕ್ಷಣಾಯ ಮಮ ರಾಮಲಕ್ಷ್ಮಣಾವಗ್ರತಃ ಪಥಿ ಸದೈವ ಗಚ್ಛತಾಮ್ || ೨೦ ||

ಸನ್ನದ್ಧಃ ಕವಚೀ ಖಡ್ಗೀ ಚಾಪಬಾಣಧರೋ ಯುವಾ |
ಗಚ್ಛನ್ಮನೋರಥಾನ್ನಶ್ಚ ರಾಮಃ ಪಾತು ಸಲಕ್ಷ್ಮಣಃ || ೨೧ ||

ರಾಮೋ ದಾಶರಥಿಃ ಶೂರೋ ಲಕ್ಷ್ಮಣಾನುಚರೋ ಬಲೀ |
ಕಾಕುತ್ಸ್ಥಃ ಪುರುಷಃ ಪೂರ್ಣಃ ಕೌಸಲ್ಯೇಯೋ ರಘೂತ್ತಮಃ || ೨೨ ||

ವೇದಾಂತವೇದ್ಯೋ ಯಜ್ಞೇಶಃ ಪುರಾಣಪುರುಷೋತ್ತಮಃ |
ಜಾನಕೀವಲ್ಲಭಃ ಶ್ರೀಮಾನಪ್ರಮೇಯಪರಾಕ್ರಮಃ || ೨೩ ||

ಇತ್ಯೇತಾನಿ ಜಪೇನ್ನಿತ್ಯಂ ಮದ್ಭಕ್ತಃ ಶ್ರದ್ಧಯಾನ್ವಿತಃ |
ಅಶ್ವಮೇಧಾಧಿಕಂ ಪುಣ್ಯಂ ಸಂಪ್ರಾಪ್ನೋತಿ ನ ಸಂಶಯಃ || ೨೪ ||

ರಾಮಂ ದೂರ್ವಾದಲಶ್ಯಾಮಂ ಪದ್ಮಾಕ್ಷಂ ಪೀತವಾಸಸಮ್ |
ಸ್ತುವಂತಿ ನಾಮಭಿರ್ದಿವ್ಯೈರ್ನ ತೇ ಸಂಸಾರಿಣೋ ನರಾಃ || ೨೫ ||

ರಾಮಂ ಲಕ್ಷ್ಮಣಪೂರ್ವಜಂ ರಘುವರಂ ಸೀತಾಪತಿಂ ಸುಂದರಂ
ಕಾಕುತ್ಸ್ಥಂ ಕರುಣಾರ್ಣವಂ ಗುಣನಿಧಿಂ ವಿಪ್ರಪ್ರಿಯಂ ಧಾರ್ಮಿಕಮ್

ರಾಜೇಂದ್ರಂ ಸತ್ಯಸಂಧಂ ದಶರಥತನಯಂ ಶ್ಯಾಮಲಂ ಶಾಂತಮೂರ್ತಿಂ
ವಂದೇ ಲೋಕಾಭಿರಾಮಂ ರಘುಕುಲತಿಲಕಂ ರಾಘವಂ ರಾವಣಾರಿಮ್ || ೨೬ ||

ರಾಮಾಯ ರಾಮಭದ್ರಾಯ ರಾಮಚಂದ್ರಾಯ ವೇಧಸೇ |
ರಘುನಾಥಾಯ ನಾಥಾಯ ಸೀತಾಯಾಃ ಪತಯೇ ನಮಃ || ೨೭ ||

ಶ್ರೀರಾಮ ರಾಮ ರಘುನಂದನ ರಾಮ ರಾಮ
ಶ್ರೀರಾಮ ರಾಮ ಭರತಾಗ್ರಜ ರಾಮ ರಾಮ |
ಶ್ರೀರಾಮ ರಾಮ ರಣಕರ್ಕಶ ರಾಮ ರಾಮ
ಶ್ರೀರಾಮ ರಾಮ ಶರಣಂ ಭವ ರಾಮ ರಾಮ || ೨೮ ||

ಶ್ರೀರಾಮಚಂದ್ರಚರಣೌ ಮನಸಾ ಸ್ಮರಾಮಿ
ಶ್ರೀರಾಮಚಂದ್ರಚರಣೌ ವಚಸಾ ಗೃಣಾಮಿ |
ಶ್ರೀರಾಮಚಂದ್ರಚರಣೌ ಶಿರಸಾ ನಮಾಮಿ
ಶ್ರೀರಾಮಚಂದ್ರಚರಣೌ ಶರಣಂ ಪ್ರಪದ್ಯೇ || ೨೯ ||

ಮಾತಾ ರಾಮೋ ಮತ್ಪಿತಾ ರಾಮಚಂದ್ರಃ
ಸ್ವಾಮೀ ರಾಮೋ ಮತ್ಸಖಾ ರಾಮಚಂದ್ರಃ |
ಸರ್ವಸ್ವಂ ಮೇ ರಾಮಚಂದ್ರೋ ದಯಾಳುಃ
ನಾನ್ಯಂ ಜಾನೇ ನೈವ ಜಾನೇ ನ ಜಾನೇ || ೩೦ ||

ದಕ್ಷಿಣೇ ಲಕ್ಷ್ಮಣೋ ಯಸ್ಯ ವಾಮೇ ಚ ಜನಕಾತ್ಮಜಾ |
ಪುರತೋ ಮಾರುತಿರ್ಯಸ್ಯ ತಂ ವಂದೇ ರಘುನಂದನಮ್ || ೩೧ ||

ಲೋಕಾಭಿರಾಮಂ ರಣರಂಗಧೀರಂ
ರಾಜೀವನೇತ್ರಂ ರಘುವಂಶನಾಥಮ್ |
ಕಾರುಣ್ಯರೂಪಂ ಕರುಣಾಕರಂ ತಂ
ಶ್ರೀರಾಮಚಂದ್ರಂ ಶರಣಂ ಪ್ರಪದ್ಯೇ || ೩೨ ||

ಮನೋಜವಂ ಮಾರುತತುಲ್ಯವೇಗಂ
ಜಿತೇಂದ್ರಿಯಂ ಬುದ್ಧಿಮತಾಂ ವರಿಷ್ಠಮ್ |
ವಾತಾತ್ಮಜಂ ವಾನರಯೂಥಮುಖ್ಯಂ
ಶ್ರೀರಾಮದೂತಂ ಶರಣಂ ಪ್ರಪದ್ಯೇ || ೩೩ ||

ಕೂಜಂತಂ ರಾಮರಾಮೇತಿ ಮಧುರಂ ಮಧುರಾಕ್ಷರಮ್ |
ಆರುಹ್ಯ ಕವಿತಾಶಾಖಾಂ ವಂದೇ ವಾಲ್ಮೀಕಿಕೋಕಿಲಮ್ || ೩೪ ||

ಆಪದಾಮಪಹರ್ತಾರಂ ದಾತಾರಂ ಸರ್ವಸಂಪದಾಮ್ |
ಲೋಕಾಭಿರಾಮಂ ಶ್ರೀರಾಮಂ ಭೂಯೋ ಭೂಯೋ ನಮಾಮ್ಯಹಮ್ || ೩೫
||

ಭರ್ಜನಂ ಭವಬೀಜಾನಾಮರ್ಜನಂ ಸುಖಸಂಪದಾಮ್ |
ತರ್ಜನಂ ಯಮದೂತಾನಾಂ ರಾಮರಾಮೇತಿ ಗರ್ಜನಮ್ || ೩೬ ||

ರಾಮೋ ರಾಜಮಣಿಃ ಸದಾ ವಿಜಯತೇ ರಾಮಂ ರಮೇಶಂ ಭಜೇ
ರಾಮೇಣಾಭಿಹತಾ ನಿಶಾಚರಚಮೂ ರಾಮಾಯ ತಸ್ಮೈ ನಮಃ |
ರಾಮಾನ್ನಾಸ್ತಿ ಪರಾಯಣಂ ಪರತರಂ ರಾಮಸ್ಯ ದಾಸೋಽಸ್ಮ್ಯಹಂ
ರಾಮೇ ಚಿತ್ತಲಯಃ ಸದಾ ಭವತು ಮೇ ಭೋ ರಾಮ ಮಾಮುದ್ಧರ || ೩೭ ||

ಶ್ರೀರಾಮ ರಾಮ ರಾಮೇತಿ ರಮೇ ರಾಮೇ ಮನೋರಮೇ |
ಸಹಸ್ರನಾಮ ತತ್ತುಲ್ಯಂ ರಾಮನಾಮ ವರಾನನೇ || ೩೮ ||

ಇತಿ ಶ್ರೀಬುಧಕೌಶಿಕಮುನಿ ವಿರಚಿತಂ ಶ್ರೀರಾಮರಕ್ಷಾ ಸ್ತೋತ್ರಮ್ |

Mahfil

Shri Ram Raksha in Gujarati

ઓં અસ્ય શ્રી રામરક્ષા સ્તોત્રમંત્રસ્ય
બુધકૌશિક ઋષિઃ
શ્રી સીતારામ ચંદ્રોદેવતા
અનુષ્ટુપ્ છંદઃ
સીતા શક્તિઃ
શ્રીમદ્ હનુમાન્ કીલકમ્
શ્રીરામચંદ્ર પ્રીત્યર્થે રામરક્ષા સ્તોત્રજપે વિનિયોગઃ ॥

ધ્યાનમ્

ધ્યાયેદાજાનુબાહું ધૃતશર ધનુષં બદ્ધ પદ્માસનસ્થં
પીતં વાસોવસાનં નવકમલ દળસ્પર્થિ નેત્રં પ્રસન્નમ્ ।
વામાંકારૂઢ સીતામુખ કમલમિલલ્લોચનં નીરદાભં
નાનાલંકાર દીપ્તં દધતમુરુ જટામંડલં રામચંદ્રમ્ ॥

સ્તોત્રમ્

ચરિતં રઘુનાથસ્ય શતકોટિ પ્રવિસ્તરમ્ ।
એકૈકમક્ષરં પુંસાં મહાપાતક નાશનમ્ ॥ 1 ॥

ધ્યાત્વા નીલોત્પલ શ્યામં રામં રાજીવલોચનમ્ ।
જાનકી લક્ષ્મણોપેતં જટામુકુટ મંડિતમ્ ॥ 2 ॥

સાસિતૂણ ધનુર્બાણ પાણિં નક્તં ચરાંતકમ્ ।
સ્વલીલયા જગત્રાતુ માવિર્ભૂતમજં વિભુમ્ ॥ 3 ॥

રામરક્ષાં પઠેત્પ્રાજ્ઞઃ પાપઘ્નીં સર્વકામદામ્ ।
શિરો મે રાઘવઃ પાતુ ફાલં દશરથાત્મજઃ ॥ 4 ॥

એતાં રામબલોપેતાં રક્ષાં યઃ સુકૃતી પઠેત્ ।
સ ચિરાયુઃ સુખી પુત્રી વિજયી વિનયી ભવેત્ ॥ 10 ॥

પાતાળ-ભૂતલ-વ્યોમ-ચારિણ-શ્ચદ્મ-ચારિણઃ ।
ન દ્રષ્ટુમપિ શક્તાસ્તે રક્ષિતં રામનામભિઃ ॥ 11 ॥

રામેતિ રામભદ્રેતિ રામચંદ્રેતિ વા સ્મરન્ ।
નરો ન લિપ્યતે પાપૈર્ભુક્તિં મુક્તિં ચ વિંદતિ ॥ 12 ॥

જગજ્જૈત્રૈક મંત્રેણ રામનામ્નાભિ રક્ષિતમ્ ।
યઃ કંઠે ધારયેત્તસ્ય કરસ્થાઃ સર્વસિદ્ધયઃ ॥ 13 ॥

વજ્રપંજર નામેદં યો રામકવચં સ્મરેત્ ।
અવ્યાહતાજ્ઞઃ સર્વત્ર લભતે જયમંગળમ્ ॥ 14 ॥

આદિષ્ટવાન્-યથા સ્વપ્ને રામરક્ષામિમાં હરઃ ।
તથા લિખિતવાન્-પ્રાતઃ પ્રબુદ્ધૌ બુધકૌશિકઃ ॥ 15 ॥

આરામઃ કલ્પવૃક્ષાણાં વિરામઃ સકલાપદામ્ ।
અભિરામ-સ્ત્રિલોકાનાં રામઃ શ્રીમાન્ સ નઃ પ્રભુઃ ॥ 16 ॥

તરુણૌ રૂપસંપન્નૌ સુકુમારૌ મહાબલૌ ।
પુંડરીક વિશાલાક્ષૌ ચીરકૃષ્ણાજિનાંબરૌ ॥ 17 ॥

ફલમૂલાશિનૌ દાંતૌ તાપસૌ બ્રહ્મચારિણૌ ।
પુત્રૌ દશરથસ્યૈતૌ ભ્રાતરૌ રામલક્ષ્મણૌ ॥ 18 ॥

શરણ્યૌ સર્વસત્ત્વાનાં શ્રેષ્ઠૌ સર્વધનુષ્મતામ્ ।
રક્ષઃકુલ નિહંતારૌ ત્રાયેતાં નો રઘૂત્તમૌ ॥ 19 ॥

આત્ત સજ્ય ધનુષા વિષુસ્પૃશા વક્ષયાશુગ નિષંગ સંગિનૌ ।
રક્ષણાય મમ રામલક્ષણાવગ્રતઃ પથિ સદૈવ ગચ્છતાં ॥ 20 ॥

સન્નદ્ધઃ કવચી ખડ્ગી ચાપબાણધરો યુવા ।
ગચ્છન્ મનોરથાન્નશ્ચ (મનોરથોડસ્માકં) રામઃ પાતુ સ લક્ષ્મણઃ ॥ 21 ॥

રામો દાશરથિ શ્શૂરો લક્ષ્મણાનુચરો બલી ।
કાકુત્સઃ પુરુષઃ પૂર્ણઃ કૌસલ્યેયો રઘૂત્તમઃ ॥ 22 ॥

વેદાંતવેદ્યો યજ્ઞેશઃ પુરાણ પુરુષોત્તમઃ ।
જાનકીવલ્લભઃ શ્રીમાનપ્રમેય પરાક્રમઃ ॥ 23 ॥

ઇત્યેતાનિ જપેન્નિત્યં મદ્ભક્તઃ શ્રદ્ધયાન્વિતઃ ।
અશ્વમેધાધિકં પુણ્યં સંપ્રાપ્નોતિ ન સંશયઃ ॥ 24 ॥

રામં દૂર્વાદળ શ્યામં પદ્માક્ષં પીતવાસસમ્ ।
સ્તુવંતિ નાભિ-ર્દિવ્યૈ-ર્નતે સંસારિણો નરાઃ ॥ 25 ॥

રામં લક્ષ્મણ પૂર્વજં રઘુવરં સીતાપતિં સુંદરમ્
કાકુત્સ્થં કરુણાર્ણવં ગુણનિધિં વિપ્રપ્રિયં ધાર્મિકમ્ ।
રાજેંદ્રં સત્યસંધં દશરથતનયં શ્યામલં શાંતમૂર્તિમ્
વંદે લોકાભિરામં રઘુકુલ તિલકં રાઘવં રાવણારિમ્ ॥ 26 ॥

રામાય રામભદ્રાય રામચંદ્રાય વેધસે ।
રઘુનાથાય નાથાય સીતાયાઃ પતયે નમઃ ॥ 27 ॥

શ્રીરામ રામ રઘુનંદન રામ રામ
શ્રીરામ રામ ભરતાગ્રજ રામ રામ ।
શ્રીરામ રામ રણકર્કશ રામ રામ
શ્રીરામ રામ શરણં ભવ રામ રામ ॥ 28 ॥

શ્રીરામ ચંદ્ર ચરણૌ મનસા સ્મરામિ
શ્રીરામ ચંદ્ર ચરણૌ વચસા ગૃહ્ણામિ ।
શ્રીરામ ચંદ્ર ચરણૌ શિરસા નમામિ
શ્રીરામ ચંદ્ર ચરણૌ શરણં પ્રપદ્યે ॥ 29 ॥

માતા રામો મત્-પિતા રામચંદ્રઃ
સ્વામી રામો મત્-સખા રામચંદ્રઃ ।
સર્વસ્વં મે રામચંદ્રો દયાળુઃ
નાન્યં જાને નૈવ ન જાને ॥ 30 ॥

દક્ષિણે લક્ષ્મણો યસ્ય વામે ચ (તુ) જનકાત્મજા ।
પુરતો મારુતિર્યસ્ય તં વંદે રઘુનંદનમ્ ॥ 31 ॥

લોકાભિરામં રણરંગધીરં
રાજીવનેત્રં રઘુવંશનાથમ્ ।
કારુણ્યરૂપં કરુણાકરં તં
શ્રીરામચંદ્રં શરણ્યં પ્રપદ્યે ॥ 32 ॥

મનોજવં મારુત તુલ્ય વેગં
જિતેંદ્રિયં બુદ્ધિમતાં વરિષ્ટમ્ ।
વાતાત્મજં વાનરયૂથ મુખ્યં
શ્રીરામદૂતં શરણં પ્રપદ્યે ॥ 33 ॥

કૂજંતં રામરામેતિ મધુરં મધુરાક્ષરમ્ ।
આરુહ્યકવિતા શાખાં વંદે વાલ્મીકિ કોકિલમ્ ॥ 34 ॥

આપદામપહર્તારં દાતારં સર્વસંપદામ્ ।
લોકાભિરામં શ્રીરામં ભૂયોભૂયો નમામ્યહં ॥ 35 ॥

ભર્જનં ભવબીજાનામર્જનં સુખસંપદામ્ ।
તર્જનં યમદૂતાનાં રામ રામેતિ ગર્જનમ્ ॥ 36 ॥

રામો રાજમણિઃ સદા વિજયતે રામં રમેશં ભજે
રામેણાભિહતા નિશાચરચમૂ રામાય તસ્મૈ નમઃ ।
રામાન્નાસ્તિ પરાયણં પરતરં રામસ્ય દાસોસ્મ્યહં
રામે ચિત્તલયઃ સદા ભવતુ મે ભો રામ મામુદ્ધર ॥ 37 ॥

શ્રીરામ રામ રામેતિ રમે રામે મનોરમે ।
સહસ્રનામ તત્તુલ્યં રામ નામ વરાનને ॥ 38 ॥

ઇતિ શ્રીબુધકૌશિકમુનિ વિરચિતં શ્રીરામ રક્ષાસ્તોત્રં સંપૂર્ણં ।

શ્રીરામ જયરામ જયજયરામ ।

Shri Ram Raksha in Marathi

अथ ध्यानम

ध्यायेदाजानुबाहुं धृतशरधनुषं बद्धपासनस्थं, पीतं वासो वसानं न[illegible]
दलस्पर्धिनेत्रं प्रसन्नम् ।
वामांकारूढ़सीतामुखकमलमिलल्लोचनं नीरदाभं नानालंकारदीप्तं
दधतमुरुजटामण्डलं रामचन्द्रम् ।

स्तोत्रम

चरितं रघुनाथस्य शतकोटिप्रविस्तरम् ।
एकैकमक्षरं पुंसां महापातकनाशनम् ।।1।।

ध्यात्वा नीलोत्पलश्याम रामं राजीवलोचनम ।
जानकी लक्ष्मणोपेतं जटामुकुटमण्डितम ।।2।।
सासितूण – धनुर्बाणपाणिं नक्तंचरान्तकम ।
स्वलीलया जगत्रातुमाविर्भूतमजं विभुम ।।3।।

रामरक्षां पठेत प्राज्ञः पापघ्नीं सर्वकामदाम ।
शिरो में राघवं पातु भालं दशरथात्मजः ।।4।।

कौसल्येयो दृशौ पातु विश्वामित्रप्रियः श्रुती ।
घ्राणं पातु मखत्राता मुखं सौमित्रिवत्सलः ।।5।।

जिव्हां विद्यानिधि पातु कण्ठं भरतवन्दितः ।
स्कन्धौ दिव्यायुधः पातु भुजौ भग्नेशकार्मुकः ।।6।।
करौ सीतापतिः पातु हृदयं जामदग्न्यजित ।
मध्यं पातु खरध्वंसी नाभिं जाम्बवदाश्रयः ।।7।।

सुग्रीवेशः कटी पातु सक्थिनी हनुत्मप्रभुः ।
ऊरु रघूत्तमः पातु रक्षःकुलविनाशकृत ।।8।।

जानुनी सेतकृत्पातु जंघे दशमुखान्तकः ।
पादौ विभीषणश्रीदः पातु रामोऽखिलं वपुः ।।9।।

एतां रामबलोपेतां रक्षां यः सुकृती पठेत ।
स चिरायुः सुखी पुत्री विजयी विनयी भवेत ।।10।।
पातालभूतलव्योमचारिण श्छचारिणः ।
न द्रष्टुमपि शक्तास्ते रक्षितं रामनामभिः ।।11।।

रामेति रामभद्रेति रामचन्द्रेति वा स्मरन ।
नरो न लिप्यते पापैर्भुक्तिं मुक्तिं च विन्दति ।।12।।

जगज्जैत्रैकमन्त्रेण रामनाम्नाभिरक्षितम ।
यः कण्ठे धारयेत्तस्य करस्थाः सर्वसिद्धयः ।।13।।

वज्रपंजरनामेदं यो रामकवचं स्मरेत ।
अव्याहताज्ञः सर्वत्र लभते जयमंगलम ।।14।।
आदिष्टवान्यथा स्वप्ने रामरक्षामिमां हरः ।
तथा लिखितवान्प्रातः प्रबुद्धो बुधकौशिकः ।।15।।

आरामः कल्पवृक्षाणां विरामः सकलापदाम ।
अभिरामस्त्रिलोकानां रामः श्रीमान्स नः प्रभुः ।।16।।

तरुणौ रूपसम्पन्नौ सुकुमारौ महाबलौ ।
पुण्डरीकविशालाक्षौ चीरकृष्णाजिनाम्बरौ ।।17।।

फलमूलाशिनौ दान्तौ तापसौ ब्रह्मचारिणौ ।
पुत्रौ दशरथस्यैतौ भ्रातरौ रामलक्ष्मणौ ।।18।।
शरण्यौ सर्वसत्त्वानां श्रेष्ठौ सर्वधनुष्मताम ।
रक्षः कुलनिहन्तारौ त्रायेतां नो रघूत्तमौ ।।19।।

आत्तसज्जधनुषाविषुस्पृशावक्षयाशुगनिषंगसंगिनौ ।
रक्षणाय मम रामलक्ष्मणावग्रतः पथि सदैव गच्छताम ।।20।।

सन्नद्धः कवची खड्गी चापबाणधरो युवा ।
गच्छन्मनोरथान्नश्च रामः पातु सलक्ष्मणः ।।21।।

रामो दाशरथिः शूरो लक्ष्मणानुचरो बली ।
काकुत्स्थः पुरुषः पूर्णः कौसल्लेयो रघूत्तमः ।।22।।
वेदान्तवेद्यो यज्ञेशः पुराणपुरुषोत्तमः ।
जानकीवल्लभः श्रीमानप्रमेयपराक्रमः ।।23।।

इत्येतानि जपन्नित्यं मद्भक्तः श्रद्धयान्वितः ।
अश्वमेधाधिकं पुण्यं सम्प्राप्नोति न संशयः ।।24।।

रामं दूर्वादलश्यामं पाक्षं पीतवाससम ।
स्तुवन्ति नामभिर्दिव्यैर्न ते संसारिणो नराः ।।25।।

रामं लक्ष्मणपूर्वजं रघुवरं सीतापतिं सुंदरं ।
काकुत्स्थं करुणार्णवं गुणनिधिं विप्रप्रियं धार्मिकम ।।26।।

राजेन्द्रं सत्यसन्धं दशरथतनयं श्यामलं शान्तमूर्ति ।
वन्दे लोकाभिरामं रघुकुलतिलकं राघवं रावणारिम ।।27।।

रामाय रामभद्राय रामचन्द्राय वेधसे ।
रघुनाथय नाथाय सीतायाः पतये नमः ।।28।।

श्रीराम राम रघुनन्दन राम राम श्रीराम राम भरताग्रज राम राम ।
श्रीराम राम रणकर्कश राम राम श्रीराम राम शरणं भव राम राम ।।29।।

श्रीरामचन्द्रचरणौ मनसा स्मरामि श्रीरामचन्द्रवरणौ वचसा गृणामि ।
श्रीरामचन्द्रचरणौ शिरसा नमामि श्रीरामचन्द्रचरणौ शरणं प्रपद्ये ।।30।।

माता रामो मत्पिता रामचन्द्रः स्वामी रामो मत्सखा रामचन्द्रः ।
सर्वस्वं मे रामचन्द्रो दयालुर्नान्यं जाने नैव जाने न जाने ।।31।।

दक्षिणे लक्ष्मणो यस्य वामे च जनकात्मजा ।
पुरतो मारुतिर्यस्य तं वन्दे रघुनंदनम ।।32।।

लोकाभिरामं रणरंगधीरं राजीवनेत्र रघुवंशनाथम ।
कारुण्यरुपं करुणाकरं तं श्रीरामचन्द्रं शरणं प्रपद्ये ।।33।।

मनोजवं मारुततुल्यवेगं जितेन्द्रियं बुद्धिमतां वरिष्ठम ।
वातात्मजं वानरयूथमुख्यं श्रीरामदूतं शरणं प्रपद्ये ।।34।।
कूजन्तं रामरामेति मधुरं मधुराक्षरम ।
आरुह्य कविताशाखां वन्दे वाल्मीकिकोकिलम ।।35।।

आपदामपहर्तारं दातारं सर्वसम्पदाम ।
लोकाभिरामं श्रीरामं भूयो भूयो नमाम्यहम ।।36।।

भर्जनं भवबीजानामर्जनं सुखसम्पदाम ।
तर्जनं यमदूतानां रामरामेति गर्जनम ।।37।।

रामो राजमणि: सदा विजयते रामं रमेशं भजे,
रामेणाभिहता निशाचरचमू, रामाय तस्मै नम: ।
रामान्नास्ति परायणं परतरं रामस्य दासोऽस्म्यहं,
रामे चित्तलय: सदा भवतु मे भो राम मामुद्धर ।।38।।

राम रामेति रामेति रमे रामे मनोरमे ।
सहस्त्र नाम तत्तुल्यं रामनाम वरानने ।।39।।